(5) * Dr. Sangita Aher (Hindi)

Impact Factor-6.261 ISSN-2348-714

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February-2019

SPECIAL ISSUE

इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य : संवेदना के स्वर

Guest Editor
Dr.Archana Pardeshi
Dr.Rameshwar Bangad
Dr.Avinash Jadhav

Chief Editor
Dr.Dhanraj T.Dhangar
Assist.Prof.(Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College, Yeola,
Dist.Nashik (M.S.)

ISSN : 2348-7143
February-2019

INDEX

	ज्पजसम व जीम च्चमत — ।नजीवत'े छंउम	page No.
1	शिकंजे का दर्द : दलित स्त्री के दोहरे शोषण की वेदना —शिल्पा शर्मा	06
2	नई सदी की संवेदनाओं को व्यक्त करनेवाली कहानीकार : आकांक्षा पारे — डा.गोविंद बुरसे	11
3	वैश्वीकरण और इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यास — डॉ.संजीवकुमार नरवाडे	16
4	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता में स्त्री चिंतन — डॉ. पवन कुमार	20
5	मुक्तिपर्व उपन्यास में दलित विमर्श — प्रा.डॉ. रामकृष्ण बदने	28
6	स्त्री मन की अभिव्यक्ति : अनामिका की कविताएँ — डॉ. अविनाश जाधव	31
7	मंगलेश डबराल की कविताओं में नारी चित्रण — डॉ. आर. एस. बांगड	34
8	संघर्षशील नारी'' (सुभाष पंत कृत 'पहाड़ चोर' उपन्यास —डॉ. बेवले ए. जे	36
9	इक्कीसवी सदी की हिंदी आत्मकथा : एक परिचय — डॉ. सुरेश मुंढे	41
10	इक्कीसवीं सदी के हिन्दी दलित–आत्मकथाओं — लामतुरे वसंत डॉ.बळीराम भुक्तरे	44
11	असगर वज़ाहत के कहानियो में चित्रित मुस्लिम — डॉ. सुब्राव जाधव , लतिका काटे	47
12	बाज़ारवाद आईने में कुमार अबुंज की कविता — डॉ.ज्ञानेश्वर गणपतराव रानभरे	51
13	'लौटना नहीं है' (स्त्री विमर्ष के संदर्भ में) — अमृता तौर, डॉ. बी. आर. नळे	55
14	संजीव का कथा साहित्य — प्रा डॉ कदम भगवान रामकिशन	56
15	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता में स्त्री विमर्ष — प्रा.डॉ. आहेर संगिता एकनाथराव	59

'CH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue -2- इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य : संवेदना के स्वर
ISSN : 2348-7143
February-2019

इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता में स्त्री विमर्श

प्रा.डॉ. आहेर संगिता एकनाथराव
महिला महाविद्यालय, गेवराई। जि. बीड।

==========

"इक्कीसवीं शती का स्त्री–विमर्श
कर रहा है स्त्री के साथ
पुरुष के भी मन को स्पर्श!
संगोष्ठियों में भी चर्चा इसकी
सबूत है उसकी काबिलियत की।"[1]

इक्कीसवींसदी की हिन्दी कविता अपनी विविधता, प्रयोगधर्मिता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तथा रुप और शिल्प के कारण अधिक चर्चित हुई है। भावना से अधिक बुध्दिवादी दृष्टिकोण, यथार्थवादी व्यंग्य और गहरी भाषा के कारण यह प्रभावषाली कविता बन गई है। अब हिंदी कविता न रस की प्यारी है न अलंकार की इच्छुक न संगीत की भूखी। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक हिंदी कविता ने कई चरणों को पार किया था। इक्कीसवीं सदी तक आते–आते कविता ने अपना रुप बदला था और पारम्पारिक छंद और अलंकारों की जगह आम आदमी, दलित, नारी तथा आदिवासी इसके केन्द्र में आ गये। कोमल भावनाओं की अभिव्यक्ति ने यथार्थ, निराशा, घुटन एवं पीड़ा तथा विद्रोह की अनुगूंज होने लगी।

इक्कीसवीं सदी के विकास और प्रगति के दौर में भी नारी की समस्याएँ खत्म नहीं हुई है, बल्कि आज भी वह अपने वजूद को तलाश रही है। नारी जीवन की यातनाओं, पीडाओं, प्रवंचनाओं, सामाजिक असमानता, सामाजिक विकृति आदि बातों को बेझिझक कविता में व्यक्त करने में कोई हिचकिचाहट कवि नहीं करता है।

"वर्षों से कर रही है, स्त्री उस पुरुष की परिक्रमा
मिल नहीं रहा उसे–
उसकी दुनिया के अंदर घुसने के लिए,
कोई ठीक–ठीक दरवाजा।"[2]

कविता मानव मन की परतें खोलती हुई, उसका चिकित्सक विश्लेषण करती है। सामाजिक उत्थान किसी भी साहित्य का उद्देश्य होता है। सामाजिक समस्याएं और प्रश्नों पर कविता में विमर्श होता है। कविता में अनेकों विमर्षों का अंकन हुआ है उनमें से ही एक है, स्त्री विमर्श। दलित और आदिवासी की तरह स्त्री भी शोषित और पीड़ित है। सदियों से उसे बस सहना ही सिखाया गया है, परन्तु अब उसने इस सहने के बारे में बोलना सिखा है और अपने ऊपर हो रहे अन्याय का बयान वह कर रही है। कवयित्रि डॉ. माधवी लिखती है,

"जंगल–जंगल पैदल
चलती रही छाले पड़ने तक
क्योंकि–
कष्टों को
सहना सिखाया गया
रोना नहीं।"[3]

इक्कीसवीं सदी की स्त्री उच्चशिक्षित है, ऊँचे पदों पर कार्यरत है। हवाई दल, वायुसेना आदि हर क्षेत्र में वह पुरुष के बराबर चल रही है। उसने अपने स्वतंत्र अस्तित्व का निर्माण किया है। अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सजग स्त्री कामयाबी की सीढ़िया चढ़ रही है। परन्तु इस विकास के रास्ते में भी नई समस्याओं से वह पीड़ित है। यह स्त्री न घर में सुरक्षित है न बाहर। विज्ञान और तकनीकी विकास का दुरुपयोग कर स्त्री पर अन्याय किया गया। अल्ट्रासाऊण्ड सोनोग्राफी के विकास से तो स्त्री–भ्रूण को गर्भ में ही मार दिया जाने लगा। "एक परंपरा सीता की है....जो किसी भी प्रकार के प्रश्न नहीं उठाती।"[4] अब तक बस सहना ही नियति है, यह मानकर स्त्री चुप थी। इक्कीसवी सदी में यह परम्परा संघर्ष करने लगी। स्त्री प्रताड़ित होने लगी मॉ के रुप में भी और कन्या के रुप में भी। इस प्रताड़ना की कशमकश में स्त्री विचार

करने लगी, सोचने लगी, विरोध भी करने लगी परन्तु कभी हारती हुई कभी जीतती हुई स्त्री आगे बढ़ रही थी। अपने आपसे, समाज से प्रश्न पूछ रही थी। स्त्री के गर्भ में पल रहा स्त्री–भ्रूण भी अपनी मां से संवाद करता है और इस दुनियां को देखने का मौका मांगता है। दुनियां में सबसे सुरक्षित स्थान मॉ का गर्भ है वहॉ पर भी यह स्त्री सुरक्षित नहीं है। पेट में पल रहा स्त्री–भ्रूण अपनी मॉ से कहता है,

"सोच मां,
केवल पुरुषों से ही समाज संपूर्ण बनेगा?
नही ना मां?
इसे सँवारने के लिए मुझे तेरा साथ देना है मां।
फिलहाल तुझे मुझे बचाना है,
बचाओगी ना?"[5]

इक्कीसवीं सदी की स्त्री स्वतंत्र तो दिखाई देती है पर आज उसे अपना भविष्य चुनने का अधिकार नहीं है। आज भी तरह–तरह के अन्याय–अत्याचार से वह पीड़ित है। सिर्फ प्राचीन काल से आज उसके शोषण का जरिया बदल गया है। शोषित वह आज भी है। कामकाजी महिला का तो और भी अधिक शोषण किया जाता है। दफ्तर और घर संभालते हुए उसकी होनेवाली सर्कस किसी को दिखाई नहीं देती।

"दिल्ली की दौड़ती सड़कों पर
दौड़ रही थी एक और कामकाजी स्त्री
बिना चूड़ी
बिना बिन्दी
उस स्त्री की
बेहिसाब चिन्ताओं में
यह कहीं दर्ज नहीं था
कि नाश्ते में क्या खाएगी
उसका चौबीस घण्टे पुराना पति।"[6]

स्त्री की मन और भावना की तह तक उतरकर इक्कीसवीं सदी की कविता अस्तित्व और अस्मिता की तलाष कर रही है। इसमें हिंदी की अनेकों कवयित्रियां आवाज दे रही है। आज की नारी आत्मनिर्भर बनी है, इसीलिए उसमें आत्मविश्वास जगा है। उसने खुद अपनी पहचान बनाई है और उसकी पहचान मिटानेवाले के तेवर भी समझ गई है।

"चुप्पियों का बहिष्कार किए
पहचान लिए हैं उसने
अपनी पहचान छीन लेनेवालों के चेहरे।"[7]

असल में इन कविताओं के माध्यम से स्त्री जीवन को व्यक्त करने का एवं संवारने का भरपूर प्रयास हुआ है। स्त्री के सामाजिक जीवन के साथ–साथ उसकी संवेदनाओं को बारीकी से यह काव्य अभिव्यक्त करता है।

इक्कीसवीं सदी की कविता परिवर्तनवादी कविता है। समाज की बेचैनी, पीड़ा, व्यथा और यथार्थ को यह अभिव्यक्त करती है। उपेक्षित समाज को न्याय देने के लिए यह कविता छटपटाती है। सामाजिक विसंगति को देखकर यह कवि अस्वस्थ होता है और उस पर अपने शब्दों के बाणों से प्रहार कर न्याय दिलाने की कोशिश करता है। हमारी पुरुषप्रधान समाजव्यवस्था में स्त्री अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही है। मर्यादाओं की बेड़ियों को तोड़कर वह मुक्त विहार करना चाहती है लेकिन उसके पंख काटकर उसे दबाया जाता है।

"नारी जब आकाश में उड़ती है तो, पर काटते हैं
फड़फड़ाती है
पानी पर तैरती है, हाथ काटते हैं,
तड़फड़ाती है
चट्टानों पर चढ़ती है, पांव तोड़ते हैं
लड़खड़ाती है

और
निरसहाय होकर संसार को
टुकुर–टुकुर निहारती है।"[8]

आधुनिक सक्षम नारी को उसकी शक्ति का एहसास हुआ है। इसीलिए वह बार–बार गिरकर भी उठती है और अपने लक्ष्य की ओर अग्रेसर हो रही है। उसके पंखों को काटने के बाद भी वह उड़ने की क्षमता प्राप्त कर रही है। गिर–गिरकर उठना फिर गिरना फिर उठना यह नित्यक्रम उसका चल रहा है, फिर भी वह हार नहीं मान रही है। वह अपनी शक्ति के साथ स्वयं उभरना चाहती है।

"चल पड़ी है नारी अब न रुकेगी,
आज उठी है नारी अब न झुकेगी।
चॉद पर पहुंचकर परचम लहराया,
अपना वर्चस्व सबको बताया,
कौन कहता है नारी, पीछे है नर से?
वो आगे है हर परचम से।"[9]

इक्कीसवीं सदी की स्त्री पाखंडी समाज के विरोध में अपनी आवाज ऊँची कर रही है। परम्परा के बंधनों को तोड़कर, संघर्ष करती हुई स्त्री निरन्तर आगे बढ़ रही है। आत्मनिर्भर होकर वह स्वयं को संवार रही है एवं अपनी जिम्मेदारियों को भी बखुबी निभा रही है। बावजूद इसके उसे पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं राजनीतिक समस्याओं से गुजरना पड़ता है इसी का वर्णन आधुनिक कविता में हुआ है।

निष्कर्ष रुप में हम कह सकते हैं कि इक्कीसवीं सदी की कविता स्त्री–विमर्श के विविध आयामों पर लिखी गयी है। इस युग की स्त्री ने अपने अधिकारों को समझकर सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त की। यह काव्य नारी के सचेत और जागृत रुप को दर्शाता है। इसमें नारी की वर्तमान स्थितियों के परिवर्तनवादी प्रयास प्रमुख है। इस सदी की कविता स्त्री की संवेदनाओं के साथ–साथ उसकी त्रासदी एवं विविध प्रकार की समस्याओं को भी उजागर करता है।

संदर्भ सूची :

अ.क्र.	रचनाकार	रचना	पेज क्र.
1.	डॉ. संगिता आहेर	प्रेरणा (स्त्री–विमर्श)	13
2.	डॉ. माधवी जाधव	इक्कीसवीं सदी का हिन्दी काव्य	22
3.	डॉ. माधवी जाधव	जिन्दगी के हाशिये पर कुछ लम्हे (छाले)	15
4.	डॉ. सूर्यनारायण रणसूभे	आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास	266
5.	डॉ. संगिता आहेर	प्रेरणा (बेटी)	15
6.	डॉ. सुकूमार भंडारे	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता	200
7.	डॉ. माधवी जाधव	इक्कीसवीं सदी का हिन्दी काव्य	24
8.	डॉ. गोखले पंचशीला एस	समर्पण (नारी)	20
9.	मधु गुप्ता	नारी उड़ान	55